सामाजिक और व्यवहार परिवर्तन संचार

बुनियादी अवधारणाएं

VIKAS SAMVAD

सामाजिक और व्यवहार परिवर्तन संचार: बुनियादी अवधारणाएं

लेखन : सचिन कुमार जैन
संपादन : वी.एन. त्रिपाठी, जावेद अनीस, पूजा सिंह
डिजाइन : निधि तिवारी
सहयोग : राकेश कुमार मालवीय और टीम विकास संवाद
वर्ष : 2024

पता : रणनीतिक संचार केन्द्र, विकास संवाद द्वारा विकसित
ए-5, आयकर कॉलोनी, भोपाल 462039

"समाज और व्यवहार परिवर्तन संचार का उद्देश्य सीधे व्यवहार में परिवर्तन लाना नहीं होता है, बल्कि समाज में यह अहसास पैदा करना होता है कि यह व्यवहार अनुचित है इसलिए इसे त्यागना चाहिए या फिर यह व्यवहार उचित है, इसलिए इसे अपनाना चाहिए।"

सामाजिक और व्यवहार परिवर्तन संचार क्या ?

सामाजिक एवं व्यवहार परिवर्तन संचार, वह संचार है, जहां किन्हीं व्यक्तियों, संस्थाओं, व्यवस्था और समुदायों के बीच ज्ञान, दृष्टिकोण, सामाजिक मानदंडों और मानकों पर सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए व्यवहार विज्ञान पर आधारित संचार रणनीतियों का उपयोग किया जाता है। इसमें विषय या समस्या विशेष के संबंध में समाज के व्यवहार का अध्ययन करके, सहभागिता के तौर-तरीकों को अपनाते हुए समाज और मनोविज्ञान की तकनीकों का प्रयोग करके रणनीति और प्रक्रिया का निर्धारण किया जाता है।

क्या यह सामान्य या पारंपरिक संचार से भिन्न है?

सामाजिक और व्यवहार परिवर्तन संचार, एक प्रमाण आधारित प्रक्रिया है, जिसमें विषय और समस्या की पृष्ठभूमि का अध्ययन किया जाता है और व्यक्ति और समुदाय के साथ संवाद स्थापित करते हुए सूचना प्रदान की जाती है। इस प्रकार के संचार में समस्या के कारणों का अध्ययन और विश्लेषण करते हुए, उनके समाधान के लिए योजना बनाई जाती है, क्रियान्वित की जाती है और उसकी सहभागिता के साथ निगरानी की जाती है। इस पूरी प्रक्रिया का लक्ष्य व्यक्तियों और समुदाय के व्यवहार में सकारात्मक बदलाव लाना होता है। सामान्य और पारंपरिक संचार की तुलना में इस संचार में 'परिवर्तन' के लक्ष्य को साधा जाता है।
सामाजिक और व्यवहार परिवर्तन संचार एक प्रक्रिया है और इसका लक्ष्य समाज में परिवर्तन लाना है।

इसमें निम्न तत्व शामिल होते हैं

- समाज (या लक्षित स्थानीय समुदाय) की व्यवस्था, रीति-रिवाजों, मान्यताओं को जानना।
- उन कारकों को जानना, जो समाज के व्यवहार को सबसे ज्यादा प्रेरित और प्रभावित करते हैं।
- संवाद के कौशल को अपनाना।
- सार्थक और मानक व्यवहारों (जिन्हें उचित व्यवहार माना जाता है) के सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक पहलुओं की गहरी समझ विकसित करना।
- समाज के प्रचलित सार्थक और सही व्यवहारों को जानना और उनके बारे में बात करना।
- संचार के लिए सही और प्रभावी माध्यम का चुनाव करना।
- सामाजिक और व्यवहार परिवर्तन संचार को एक प्रक्रिया के रूप में निरंतरता के साथ प्रयोग में लाना।

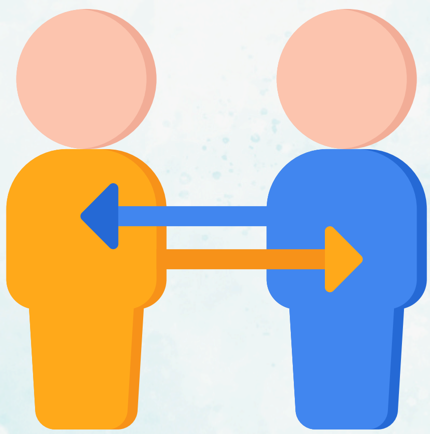

रणनीतिक संचार केंद्र, विकास संवाद का उपक्रम, भोपाल, 07554252789, communication@vssmp.org

सामाजिक और व्यवहार परिवर्तन प्रक्रिया के तत्व

समाज

समाज, समुदायों से मिलकर बना एक समूह होता है। इसमें शामिल अलग-अलग समुदायों की अपनी-अपनी संस्कृतियाँ, विश्वास, तौर-तरीके और विशेषताएं होती हैं। इनमें विविधता होती है, लेकिन समाज के रूप में आते ही ये सभी समूह एक दूसरे पर निर्भर हो जाते हैं। इसी निर्भरता से सामाजिक क्रियाकलाप जन्म लेते हैं और सामाजिक व्यवहार का रूप ले लेते हैं। चूंकि समाज एक ऐसा समूह है, जो एक बार में नहीं बना है बल्कि उसका निरंतर विकास होता रहा है, इसलिए यह एक ठहरा हुआ या जड़ समूह नहीं होता है। चूंकि इस समूह में कई लोग और कई समुदाय एक साथ रहते हैं, इसलिए एक साथ रहने के लिए समाज में 'मानक व्यवहार और व्यवस्थाएं' बनती जाती हैं। समाज के अपने नियम होते हैं, जिनका पालन करना सभी से अपेक्षित होता है।

संचार

लक्षित समूह की प्रेरणाओं, प्राथमिकताओं, जरूरतों और आकांक्षाओं को जानते हुए आपसी समझ का आदान-प्रदान करने की प्रक्रिया ही संचार होती है, अर्थात हमारे विचारों, भावनाओं और संवेदनाओं की अभिव्यक्ति ही संचार है। संचार के जरिए हम तथ्यों, भावनाओं, योजनाओं और दृष्टिकोणों को एक-दूसरे के साथ साझा करते हैं। इसमें कहना, सुनना, महसूस करना और मौन रहना भी शामिल होता है। संचार की प्रक्रिया में संदेश देने के लिए किसी न किसी माध्यम (बोलना, समाचार पत्र, टेलीविज़न, रेडियो, व्यक्तियों से सीधे बातचीत आदि) की जरूरत होती है। यह जानना जरूरी होता है कि हमारा लक्षित समूह कौन सा है और उसे किस माध्यम से संदेश प्रदान करने से प्रभावी बदलाव आएगा। संचार की प्रक्रिया में हमने लोगों को क्या और कैसे बताया यह महत्वपूर्ण नहीं है, ये ज्यादा महत्वपूर्ण है कि लोगों ने क्या समझा है।

सामाजिक परिवर्तन

समाज का अपना एक व्यवहार होता है और इस व्यवहार का निर्माण उसकी मान्यताओं, आकांक्षाओं, परस्पर संबंधों, नेतृत्व की व्यवस्था, विचारों, सांस्कृतिक सिद्धांतों आदि के प्रभाव से होता है। यह देखा जाता है कि समाज के कुछ व्यवहार, रीति-रिवाज़, मान्यताएं और व्यवस्थाएं समावेशी और गरिमामय नहीं हैं। उनमें परिवर्तन के प्रयास ही सामाजिक परिवर्तन की पहल होती है। इसके साथ ही समाज में कई व्यवहार ऐसे भी किए जाते हैं, जिनके पीछे कोई मान्यता भी नहीं होती है, लेकिन चूंकि वे कही किसी ख़ास परिस्थिति में अपनाए गए होते हैं, इसलिए समाज उन्हें अपना मान्य व्यवहार बना लेता है। उन व्यवहारों में परिवर्तन लाने की पहल की जाती है। इसके साथ ही इसमें नीतियों और व्यवस्था को भी बदलने का लक्ष्य रखा जाता है।

व्यवहार परिवर्तन

समाज की बेहतरी और सभ्यता के मानकों को ध्यान में रखते हुए समाज, समुदाय और व्यक्तियों के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाना ही व्यवहार परिवर्तन है। चूंकि व्यक्ति और सामजिक व्यवहारों का निर्माण सामाजिक-सांस्कृतिक पहलुओं पर आधारित होता है, इसलिए व्यवहार परिवर्तन के लिए इन पहलुओं को जानना-समझना बहुत जरूरी होता है।

VIKAS SAMVAD
रणनीतिक संचार केंद्र, विकास संवाद का उपक्रम, भोपाल, 07554252789, communication@vssmp.org

सामाजिक
व्यवहार परिवर्तन के मायने

जैसा कि शब्द से ही जाहिर है कि सामाजिक व्यवहार वह व्यवहार होता है जो सामाजिक रूप से मान्य होता है। समाज अपने अनुभवों, रीति-नीति, परंपराओं और अनुभवों के आधार पर व्यवहार के मानक तय करता है। और अगर इन व्यवहारों में बदलाव लाना होता है तो मान्यताओं और मानकों में बदलाव की पहल करना होती है।

उदाहरण के लिए, महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य, पोषण और संरक्षण के लिए सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन की प्रक्रिया का आधार होते हैं 'मानक व्यवहार'।

यह एक मूलभूत सिद्धांत है कि समस्याओं और चुनौतियों के लिए लोगों, महिलाओं और वंचित समुदायों को ही आरोपी नहीं बनाना चाहिए।

मानक व्यवहार का अर्थ है वे व्यवहार, जिन्हें बिना किसी शर्त और अपेक्षा के लागू किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए गर्भवती महिला को गर्भावस्था के दौरान दो घंटे आराम करना चाहिए। गर्भावस्था के दौरान महिला की चार प्रसव पूर्व जांचें होनी चाहिए। जन्म के एक घंटे के भीतर नवजात शिशु को मां का दूध पिलाया जाना चाहिए।

सामाजिक व्यवहार परिवर्तन संचार की प्रक्रिया में उन परिस्थितियों और कारणों को जानना जरूरी होता है, जो उनके व्यवहार को स्थापित करती हैं।

सामाजिक व्यवहार के बारे में जानने के बाद हम 'मानक व्यवहारों' के सन्दर्भ में उनका आकलन करते हैं। इनमें जो भी भेद या अंतर दिखाई पड़ता है, उसे दूर करने के उद्देश्य से 'संचार' का प्रयोग किया जाता है, यानी व्यक्तियों, परिवार और समुदाय को 'मानक व्यवहार' अपनाने के लिए प्रेरित करना।

यह संभव है कि वर्तमान सामाजिक व्यवहारों की पृष्ठभूमि में सांस्कृतिक-पारंपरिक मान्यताएं प्रभावी भूमिका निभा रही होंगी। अतः ऐसे व्यवहारों में उपदेश या निर्देश से परिवर्तन नहीं लाया जा सकता है। तब व्यावहारिक संचार का प्रयोग करने की जरूरत पड़ती है, यानी स्थानीय समुदाय की स्थितियों का सहभागी आकलन करना, समस्या का निर्धारण करना, समस्या के कारणों की पड़ताल करना और उन कारणों को दूर करने के लिए 'सही व्यवहारों' को प्रस्तुत करना। यहाँ संचार एक प्रक्रिया के रूप में प्रयोग में आने वाली तकनीक होगी।

सामाजिक व्यवहार परिवर्तन संचार की प्रक्रिया में यह कोशिश होती है कि सांस्कृतिक और पारंपरिक मान्यताओं को तुरंत खारिज करने वाली बात नहीं की जाए। अगर कोई समुदाय यह मानता है कि धरती उनकी मां है और इसी से उनका पालन-पोषण होता है, इसलिए प्रसव के बाद का पहला दूध धरती को चढ़ाया जाता है; तो ऐसी स्थिति में क्या सीधे-सीधे यह संदेश दिया जा सकता है कि यह गलत व्यवहार है? इस स्थिति में जरूरी यह होगा कि उनके साथ संवाद स्थापित किया जाए। विश्वास आधारित रिश्ता बनाया जाए। प्रसव के बाद, पहले दूध का बच्चे के लिए क्या महत्व है, इस सन्देश को बार-बार दोहराया जाए। यानी नकारात्मक संदेश के स्थान पर सकारात्मक संदेश का प्रयोग किया जाए।

इस प्रक्रिया में ऐसे अवसर भी आएंगे, जब समुदाय मानक व्यवहार की बात को मानने के लिए तैयार न होगा। तब बेहतर होगा कि कुछ समय के लिए उन संदेशों को विराम दे दिया जाए। उद्देश्य यह है कि समुदाय से रिश्ता नहीं टूटना चाहिए।

इस धारणा और पूर्वाग्रह से मुक्त होना होगा कि जो लोग गरीब हैं, वंचित और गाँव के रहने वाले हैं, किसी संप्रदाय विशेष से संबंध रखते हैं, उनके ही व्यवहार में समस्याएं हैं।

> "सामाजिक व्यवहार परिवर्तन संचार कोई आयोजन नहीं है। **यह एक प्रक्रिया है।** इसमें बहुत संयम के साथ बार-बार संवाद किए जाने की जरूरत होगी।"

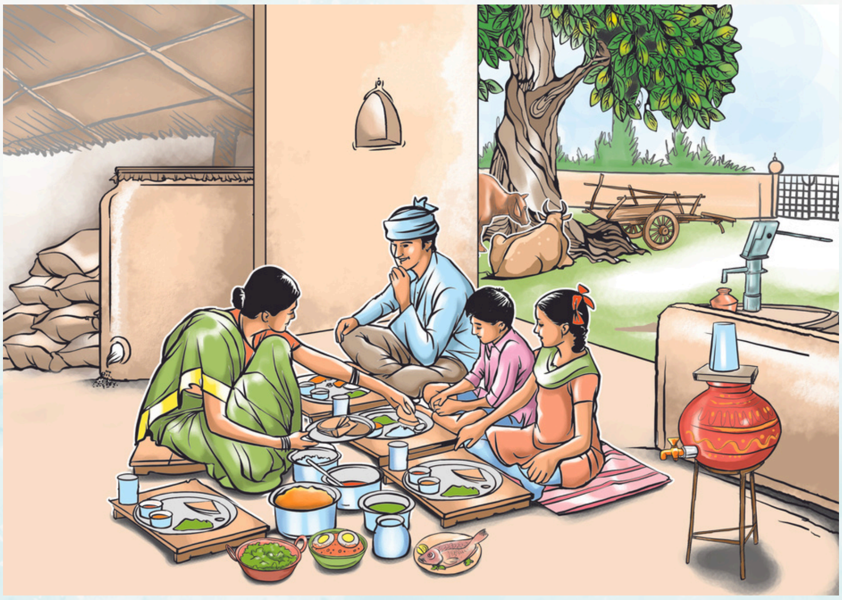

ज़रा अपने आसपास देखिए, उन परिवारों को देखिए जो आर्थिक रूप से संपन्न हैं, लेकिन उनके भोजन व्यवहार क्या हैं? क्या उन्हें यह पता है कि वे कितना नमक, शक्कर और डिब्बाबंद भोजन कर रहे हैं? उन्हें तो जानकारी है कि जीवनशैली से सम्बंधित समस्याएं क्यों होती हैं, असंतुलित भोजन के क्या परिणाम हो सकते है, फिर भी वे अपने खान-पान के तरीकों और भोजन शैली को नहीं बदलते हैं!

सामाजिक व्यवहार परिवर्तन का मतलब है समुदाय की, लोगों की चेतना पर काम करना। उन्हें **केवल जागरूक करना नहीं, बल्कि उनके मानस को प्रभावित करना**।

रणनीतिक संचार केंद्र, विकास संवाद का उपक्रम, भोपाल, 07554252789, communication@vssmp.org

समाज और व्यवहार के परस्पर सम्बन्ध

समाज और व्यवहार परिवर्तन संचार की शुरुआत उन कारकों के अध्ययन-विश्लेषण से होती है, जिनसे समाज और व्यक्ति के व्यवहार का निर्माण होता है। उन कारकों की पहचान करना सबसे जरूरी होता है, जिनसे यह स्पष्ट रूप से पता चल सके कि ऐसा क्यों है कि बाल विवाह के दुष्प्रभाव जानने के बाद भी परिवार और समुदाय बाल विवाह करते हैं? सभी को यह पता है कि बाल विवाह एक कानूनी अपराध भी है, फिर भी कानून के भय या सम्मान पर सामाजिक परंपरा हावी क्यों होती है?

सामान्य तौर पर, यह सभी को जानकारी है कि नवजात शिशु को जन्म के एक घंटे के भीतर मां का दूध पिलाए जाने से उसके जीवन को स्वास्थ्य और सुरक्षा मिलेगी, इसके बावजूद, समाज इस व्यवहार को नहीं अपनाता है। वे कौन से कारक हैं, जो समाज को शिशु के लिए उपयोगी और आवश्यक स्तनपान के व्यवहार को नहीं अपनाने देते हैं? यही प्रश्न स्वच्छता, खुले में शौच जाने और शौचालय का उपयोग न करने की प्रवृत्ति पर भी पूछे जा सकते हैं।

वास्तव में समाज विभिन्न कालखंडों में बनाई और अपनाई गई रूढ़ियों और परंपराओं के प्रति ज्यादा संवेदनशील होता है। वह हर परिस्थिति में उनका पालन करने का प्रयास करता है। अगर कोई उन पर रूढ़ियों और परंपराओं को बदलने का दबाव डालता है तो व्यक्ति, समूह और समुदाय उनका प्रतिकार करता है।

समाज स्वयं जो निर्माण करता है, उन्हें वह हर परिस्थिति में अपनाने और व्यवहार में लाने को तत्पर रहता है। वह अपने द्वारा निर्मित हर संरचना (तालाब, कुएं, मंदिर आदि), व्यवस्था (जाति व्यवस्था) या रूढ़ियों और परंपराओं (बाल विवाह, स्त्रियों के सीमित अधिकार, नातरा प्रथा आदि) को स्वीकार करता है यानी उनके प्रति अपनी निजी और सामाजिक जिम्मेदारी को महसूस करता है। यह दूसरी बात है कि वह उनके दुष्प्रभावों या तर्कों या वैज्ञानिक पहलुओं के बारे में चर्चा करने को तैयार नहीं होता है।

बहरहाल यह भी सच है कि कुछ प्रथाओं (जैसे सती प्रथा या वंचित जाति समूहों को अपने शरीर के ऊपरी अंगों पर वस्त्र न पहनने की बाध्यता आदि) को समाज ने समय के साथ त्यागने की कोशिश भी की है। ऐसा तभी होता है जब समाज स्वयं यह महसूस करने लगता है कि ये परंपरा, प्रथा या व्यवहार अनुचित है। इसके साथ ही अनुचित व्यवहार जारी भी रखा जाता है क्योंकि उनका संबंध सामाजिक या आर्थिक सत्ता और नियंत्रण से होता है। नातरा प्रथा एक ऐसी ही प्रथा है, जो न केवल स्त्री की अस्मिता और अधिकारों को सीमित करती है, बल्कि संवैधानिक और कानूनी प्रावधानों के विरुद्ध भी है, लेकिन फिर भी उसका व्यवहार जारी है।

समाज अपने व्यवहार में तभी बदलाव लाता है, जब वह उस बदलाव की जरूरत को खुद महसूस करता है।

समाज और व्यवहार परिवर्तन संचार का उद्देश्य सीधे व्यवहार में परिवर्तन लाना नहीं होता है, बल्कि समाज में यह अहसास पैदा करना होता है कि यह व्यवहार अनुचित है इसलिए इसे त्यागना चाहिए या फिर यह व्यवहार उचित है, इसलिए इसे अपनाना चाहिए।

समाज और व्यक्ति के व्यवहारों का निर्माण उसके चेतना यानी सोचने, विचारने, विश्लेषण करने, परीक्षण करने की प्रवृत्ति से भी प्रभावित होता है। अतः यह नहीं माना जा सकता है कि उसके व्यवहार स्थाई या जड़ हैं। अनुभवों और समय के साथ उनमें स्वतः परिवर्तन भी होता रहता है। यह निर्भर करता है कि वह किन परिस्थितियों, किन चुनौतियों और किन विचारों से प्रभावित होता है! अतः समाज और व्यवहार परिवर्तन संचार की प्रक्रिया में उन कारकों का अध्ययन आवश्यक होता है, जो व्यक्ति की चेतना को प्रभावित करते हैं और जिसके फलस्वरूप व्यवहार में परिवर्तन होता है।

व्यवहार का निर्माण कैसे होता है?

व्यक्ति के व्यवहार का निर्माण समाजीकरण की प्रक्रिया का परिणाम होता है। जब व्यक्ति मां के गर्भ में होता है, तभी से उसके व्यवहार का निर्माण होने लगता है। गर्भवती महिला के साथ होने वाले व्यवहार, उसके पोषण, संगत, देखभाल, यहां तक कि बाहरी पर्यावरण यानी वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और तापमान से भी गर्भस्थ शिशु का विकास प्रभावित होता है। अतः जब व्यवहार परिवर्तन की पहल की जाती है, तब इन कारकों को जाना – समझना और इनके मुताबिक़ पहल करना बुनियादी शर्त होती है।

व्यवहार विज्ञानियों कैरेन ग्लांज, बी.के. रिमर और डी. बिशप के अध्ययन के मुताबिक जन्म लेने के बाद व्यक्ति के व्यवहार का निर्माण चार स्तरों या चार तलों पर होता है। प्रभावी समाज और व्यवहार परिवर्तन संचार की प्रक्रिया में इन चार तलों की भूमिका और प्रभाव का परीक्षण करते हुए संचार की नीति बनाने के जरूरत होती है। ये **चार तल** इस प्रकार हैं –

तल	व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारक	कारकों के प्रभाव	व्यावहारिक पहलू
व्यक्तिगत	व्यक्ति की समझ, जानकारियां और ज्ञान, तौर-तरीके, कौशल, भावनाएं और उसके विश्वास।	व्यक्ति अपने आसपास जो भी देखता है, सुनता है, उसे जो भी सिखाया जाता है, उससे उसके विश्वास का निर्माण होता है।	स्वयं (व्यक्ति) की चेतना से यह निर्धारित होता है कि वह क्या पहल करे?
परिवार और समान समूह	व्यक्ति अपने निकटतम संबंधी, मित्र, पति-पत्नी, परिजन और रिश्ते-नाते।	परिवार और समुदाय के अपने स्थापित व्यवहार होते हैं, इनसे व्यक्ति के व्यवहार प्रभावित होते हैं। जैसे परिवार में धर्म, परंपराओं, रीति रिवाजों की स्थापना कहानियों, बातचीत और कर्मकांडों से गुज़रते हुए होती है।	अंतर वैयक्तिक संबंधों और संवाद की शुरुआत यहीं से होती है। यहां वह अपने विचारों, सहमति-असहमति को व्यक्त करना शुरू करता है।
समुदाय	समुदाय, समुदाय के लोग, समुदाय के समूह, समुदाय का नेतृत्व, समुदाय के नियम और व्यवस्था, समुदाय के विश्वास, समुदाय के मूल्य	व्यक्ति सामान्यतः समुदाय के द्वारा पूर्व-निर्धारित नियमों और व्यवस्था के मुताबिक़ व्यवहार करता है। समुदाय की अपनी प्रभावी नेतृत्व व्यवस्था होती है। इसके मुताबिक़ ही व्यक्ति का उन्मुखीकरण होता है।	यहां सामुदायिक संस्थाएं होती हैं और यहां नेतृत्व से मेल और संवाद होता है। समुदाय व्यक्ति को प्रभावित करना चाहता है ताकि उसकी पहचान बनी रहे।

तल	व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारक	कारकों के प्रभाव	व्यावहारिक पहलू
सामाजिक/ संरचनागत व्यवस्था	व्यापक समूह, सामाजिक नेतृत्व, स्वास्थ्य व्यवस्था, संसाधन, नीतियां, धर्म, संस्कृति तकनीक, आर्थिक व्यवस्था, कायदे-क़ानून।	समाज एक व्यापक और जटिल इकाई होती है। इसमें समुदाय, धर्म, विश्वास, जाति के आधार पर बने समूह समाहित होते हैं। उनके बीच के संबंध कुछ नियमों, मान्यताओं और शर्तों के अधीन होते हैं। राजनीतिक व्यवस्था और नीतियां बनाने की प्रक्रिया शक्ति से प्रभावित होती है।	इस स्तर पर नीतियां, क़ानून, राज्य व्यवस्था और व्यापक समाज होता है। जैसा व्यक्ति और समुदाय चाहते हैं, संरचनागत व्यवस्था वैसा ही व्यवहार करती है। अकसर ये दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं।

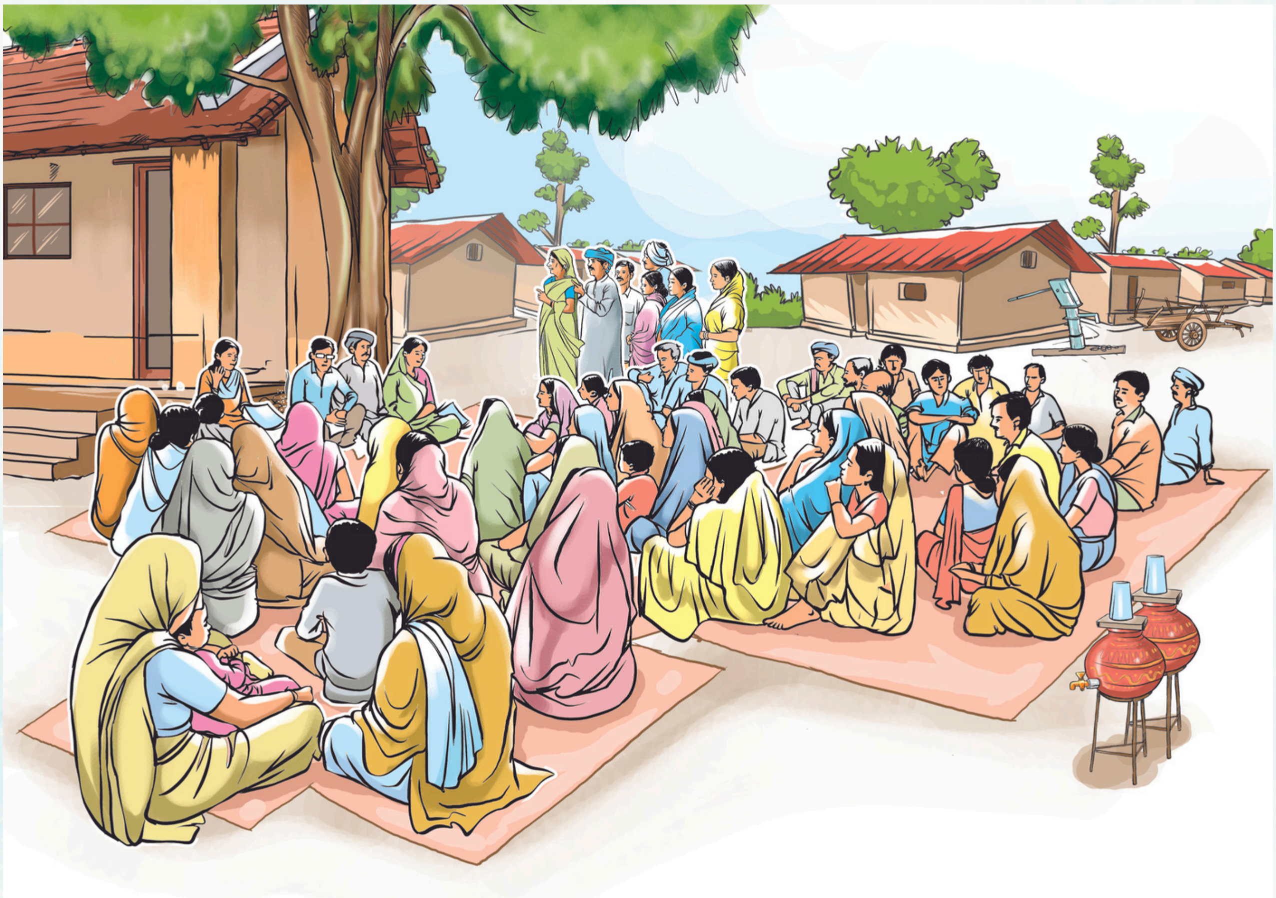

कैसे बनता है हमारा व्यवहार ?

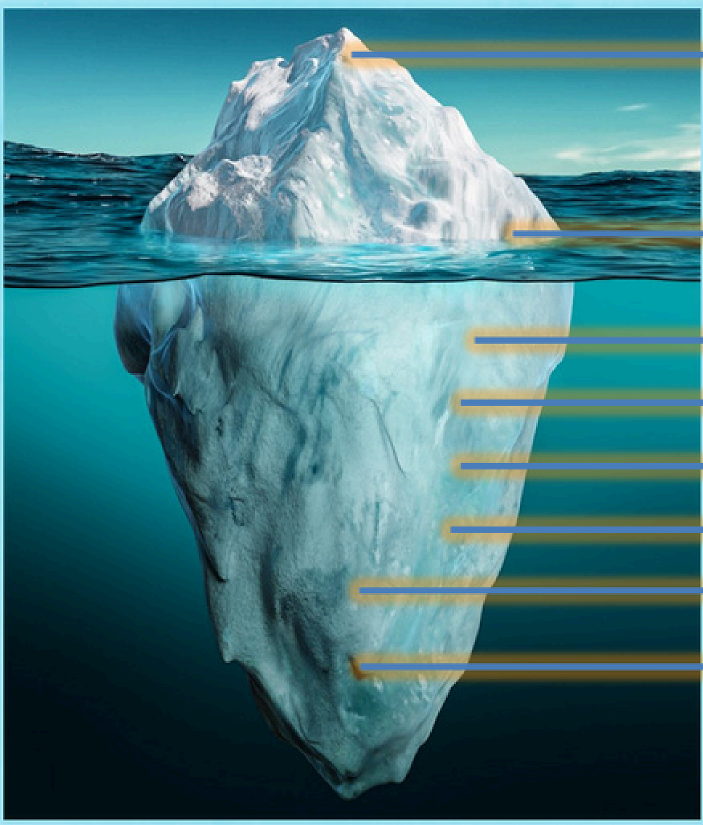

- मेरा व्यवहार-मेरी आदतें-मेरी भाषा
- मेरे निर्णय-मेरी प्रतिबद्धता
- मेरी प्राथमिकताएं
- व्यवस्था/राज्य की नीतियां/कायदे
- मेरी मान्यताएं
- मेरे भय
- मेरे सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्य
- मेरा सामाजिक उन्मुखीकरण – रीतियां , परम्पराएं, सामाजिक व्यवहार, सामाजिक-सांस्कृतिक कहानियां

प्रश्न यह है कि हमारी पहचान क्या है और वास्तव में हम अपनी पहचान किस रूप में देखना चाहते हैं?

सबसे ज्यादा प्रभावी पहचान हमारे 'व्यवहार' से बनती है। लोग अपने आप को हमसे कैसे जोड़ते हैं या अलग पाते हैं, इससे पता चलता है कि हमारे 'व्यवहार' को किस नज़रिए से देखा जा रहा है? व्यवहार सबसे पहले और सबसे साफ़ रूप में दिखाई देता है। हमारे व्यवहार ही सबसे साफ़ दिखाई देते हैं, जिन तत्वों से व्यवहार बनता है, वे उतने साफ-साफ नहीं दिखाई देते हैं।

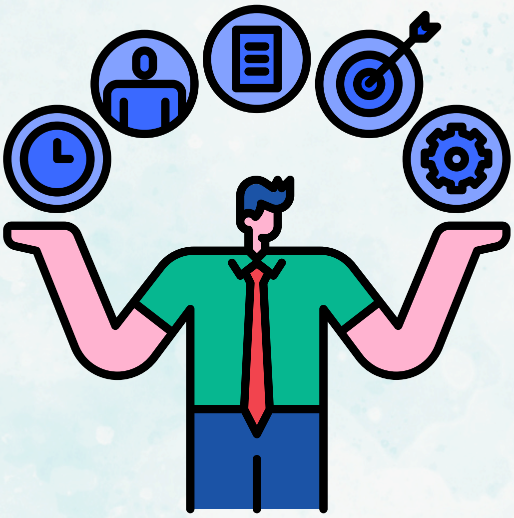

हमारा व्यवहार कैसे बनता है?

हमारा व्यवहार बनता है हमारे अपने निर्णयों से। हम जिस बात को, तरीके को, विषय को, विचार को महत्वपूर्ण मानते हैं, उनके आधार ही अपनी प्रतिबद्धताएं तय करते हैं और निर्णय लेते हैं। हमारे व्यवहार और निर्णय ही सामने नज़र आते हैं।

व्यवहार और निर्णय को स्वरुप देने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाती हैं हमारी मान्यताएं। हमारी मान्यताएं बनती है समाज और परिवार के द्वारा दी जा रही शिक्षाओं से। ये शिक्षाएं आती हैं सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों से। सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाते हैं रीति-रिवाज़, परम्पराएं , रूढ़ियां।

रीति-रिवाजों, परंपराओं और रूढ़ियों की व्याख्या होती है धार्मिक साहित्य में, कहानियों में, कथानकों में; जिन तत्वों से व्यवहार का निर्माण होता है, वे सामने नहीं दिखाई देते हैं। वे कहीं गहराई में मौजूद होते हैं।

सोचना चाहिए कि हमारा व्यवहार और हमारे निर्णय क्यों और कैसे निर्धारित होते हैं? यह जांचें कि मेरी भाषा गरिमामय है? मेरा व्यवहार बंधुतापूर्ण है? क्या हम समानता में विश्वास रखते हैं? और जब व्यवहार में बदलाव की जरूरत महसूस की जाती है, तब यह ध्यान रखना जरूरी होता है कि व्यवहार में परिवर्तन के लिए सामाजिक-सांस्कृतिक पहलुओं में भी बदलाव लाना पड़ता है। पूर्व निर्धारित मानकों को जानना, समझना और उनका विश्लेषण करना होता है। तब शुरू होती है व्यवहार परिवर्तन की प्रक्रिया।

सामाजिक पारिस्थितिकी मॉडल

व्यक्ति के व्यवहार का निर्माण एक ऐसी जटिल प्रक्रिया के माध्यम से होता है, जो लगातार चलती रहती है और जिसे संस्कृति, रीति रिवाज़, सामाजिक मानक, धर्म, परम्पराएं , विचार और धारणाएं जैसे तत्व गहरे तक प्रभावित करते हैं। इस पहलू को **'ब्रान्फेन्ब्रेनर्स, 1979; ग्लांज और रिमर, 2005; ग्लांज और बिशप, 2010'** के सामाजिक पारिस्थितिकी मॉडल से समझा जा सकता है।

सामाजिक और व्यवहार परिवर्तन संचार की सोच इस विश्वास पर आधारित है कि कोई भी व्यवहार व्यक्ति खुद अकेले नहीं बनाता है; इसीलिए उन व्यवहारों में परिवर्तन उस व्यक्ति के साथ काम करके ही नहीं लाया जा सकता है। व्यवहार परिवर्तन के लिए उन सभीसंस्थाओं, समूहों और व्यवस्था के साथ संचार करने की जरूरत होती है, जो व्यक्ति के व्यवहार को निर्धारित करने में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। इसे समझने के लिए हम एक विषय 'स्त्रियों के खिलाफ हिंसा' का उदाहरण ले सकते हैं। क्या इसमें केवल हिंसा से पीड़ित और हिंसा करने वाला व्यक्ति की शामिल होता है या व्यवस्थागत संरचनाएं भी इसका हिस्सा होती हैं?

स्त्रियों के खिलाफ हिंसा

व्यक्ति

व्यक्ति का स्वयं का संज्ञान, और अनुभव; जिन घटनाओं ने व्यक्ति को प्रभावित किया; व्यक्ति के विचार, विश्लेषण और निष्कर्ष; व्यक्ति का देखना, सुनना, पढ़ना; व्यक्ति की रुचियां;

* जिसके साथ हिंसा होती है
* जो हिंसा करता है
* जो हिंसा का प्रतिकार करता है

परिवार और मित्र

वे लोग, जिनके साथ व्यक्ति रहता है, जिनके साथ कोई रिश्ता होता है, जिसे उसकी बातचीत और सम्बन्ध होते हैं;

* परिवार की व्यवस्था
* परिवार की परम्पराएं और मूल्य
* परिवार के सदस्यों/मित्रों के विचार

समुदाय

व्यक्ति का सामाजिक समूह, जिसके साथ वह एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र या दायरे में रहता है; इनमें कोई न कोई समान चारित्रिक गुण होते हैं; रुचियां और समान प्राथमिकताएं होती हैं;

*स्त्री घर के काम करती है
*पुरुष ही प्रधान है
*परम्पराएं और रीति रिवाज़

संस्थाएं और सेवाएं

वे संस्थाएं जो व्यक्ति को सेवाएं उपलब्ध करवाती हैं; जिसे व्यक्ति का सेवा लेने और देने का सम्बन्ध होता है; उनसे जुड़े अनुभव होते हैं;

*स्कूल; सामाजिक संस्थाएं
* स्वास्थ्य संस्थाएं
*आंगनवाड़ी; पुलिस
* फ़िल्में; मीडिया; साहित्य

नीति, समाज और पर्यावरण

वे क़ानून, नीतियां, नियम, परम्पराएं, रीति रिवाज़, नियामक व्यवस्थाएं, जो व्यक्ति और समाज को सुशासित करती हैं;

* स्त्रियों के खिलाफ हिंसा रोकने के क़ानून
* संवेदीकरण की नीतियां
* संवैधानिक व्यवस्थाएं और संवैधानिक मूल्य
* समाज में वैज्ञानिक और समतामूलक सोच

सामाजिक व्यवहार परिवर्तन के आधारभूत तत्व

व्यक्ति के व्यवहारों का निर्माण व्यक्ति के अपने उन्मुखीकरण, सोच समझ, विचार से होता है। इसके साथ ही सामाजिक व्यवस्थाएं, रीति रिवाज़, परम्पराएं भी इनमें एक अहम् भूमिका निभाती है। इसके साथ ही समाज और राज्य व्यवस्था के मानक और कायदे-क़ानून व्यक्ति के व्यवहार को एक आकार प्रदान करते हैं।

इतना ही नहीं **संचार माध्यम, मनोरंजन के साधन, साहित्य और रचनात्मकता का भी अपना ख़ास प्रभाव होता है**। इस सन्दर्भ में जब सामाजिक व्यवहार परिवर्तन के लिए संचार की रणनीति बनाई जाती है, तब यह जानना जरूरी हो जाता है कि सामाजिक व्यवहार परिवर्तन के आधारभूत तत्व कौन से होंगे?

सूचना और जानकारियां

व्यक्ति के स्वभाव में तार्किकता, जिज्ञासा, ज्ञान से विचार और विचार से ज्ञान की प्रक्रिया का विस्तार होता है

मानक

**समाज के अपने कुछ मानक होते हैं. ये मानक व्यक्ति को सिखाये-समझाए भी जाते हैं और अकसर व्यक्ति सामाजिक व्यवहार देख-समझ कर भी मानकों को अपनाता है.
समाज के मानक कौन से हैं और क्यों ?**

प्रेरणा या प्रेरक तत्व

व्यक्ति के तौर तरीके, बदलाव की जरूरत को महसूस करना, मूल्य, विश्वास, संवेदनाएं

पहल की क्षमता

व्यक्ति के कौशल, आत्मविश्वास, क्षमताएं, अपने विचारों में विश्वास

रणनीतिक समझ

सामाजिक व्यवहार परिवर्तन के लिए सामूहिक पहल की जरूरत होती है और पहल को सामूहिक बनाने के लिए सह-अस्तित्व में विश्वास की जरूरत होती है

VIKAS SAMVAD
रणनीतिक संचार केंद्र, विकास संवाद का उपक्रम, भोपाल, 07554252789, communication@vssmp.org

व्यवहार, परिवर्तन और संचार

संचार का बुनियादी मकसद क्या होता है?

किसी बात को मनवाना। यदि सामने वाला बात को मान ले तो क्या संचार समाप्त हो जाता है?

क्या हमेशा संचार में वही संदेश दिया जाता है, जो दूसरा व्यक्ति नहीं जानता है?

- क्या लोग नहीं जानते हैं कि मां का पहला गाढ़ा दूध कितना उपयोगी होता है?
- क्या लोग नहीं जानते हैं कि पीने का पानी साफ़ होना चाहिए?
- क्या लोग नहीं जानते हैं कि बिना सब्जी-दाल-तेल के केवल रोटी खाने से शरीर की जरूरत पूरी नहीं होती है?
- क्या लोग नहीं जानते हैं कि किसी के साथ हिंसा/मारपीट नहीं करनी चाहिए?
- क्या लोग नहीं जानते हैं कि शराब पीना शरीर और सामाजिक संबंधों के लिए अच्छा नहीं होता है?
- क्या लोग नहीं जानते हैं कि बाल विवाह सामाजिक और कानूनी अपराध है?

हम यह जानते हैं, लेकिन किसी विशेष परिस्थिति या उन्मुखीकरण में हमारा दिमाग एक ख़ास निर्णय ले लेता है और उस निर्णय में गहरा विश्वास करने लगता है। किसी समूह के दबाव में शराब पीना शुरू किया और महसूस किया कि इससे सुकून मिलता है। यह देखा कि गांव में पानी के स्रोत नहीं है और इसके लिए कोई पहल भी नहीं हो रही है, तो अस्वच्छ पानी को ही वास्तविकता मान लिया। साफ़ पानी को हासिल करने के लिए संघर्ष करना पड़ेगा। उसके लिए तैयारी नहीं होती है। बाधाएं होती हैं।

सामाजिक व्यवस्था में यह सोच बनी कि प्रसव के बाद का पहला गाढ़ा दूध पीला होता है, वह सामान्य दूध से अलग रंग का होता है, इसलिए अच्छा नहीं होता है या फिर यह मान्यता कि प्रजनन की प्रतीक धरती है तो उसे ही वह दूध सौंप देना चाहिए। चली आ रही परंपरा को ज्यों का त्यों मान लेना आसान होता है और कोई टकराव पैदा नहीं होता है इसलिए उन्हें स्वीकार कर लेना ही बेहतर होता है।

अलग-अलग कारणों से हमारा दिमाग हमारे व्यवहार का निर्धारण करता है। उन व्यवहारों से बाहर निकलना असुविधाजनक और असहज होता है। इसलिए दिमाग हमेशा व्यवहार बदलने के लिए तैयार नहीं होता है। वह तर्क करता है। वह विरोध करता है। वह जोखिम नहीं उठाना चाहता है।

ज़रा सोचिए अगर हमें ही किसी व्यवहार को अपनाने में जोखिम महसूस होगा तो क्या हम आसानी से उसके लिए तैयार होंगे?

हम सामाजिक और व्यक्तिगत व्यवहार में बदलाव के लिए संचार की बात कर रहे हैं, उसके लिए हमें उस व्यवस्था से टकराना होगा जो लोगों ने अपने दिलो दिमाग में बना रखी है। दरअसल सामाजिक व्यवहार परिवर्तन एक संवाद मूलक प्रक्रिया है जो सकारात्मक व्यवहार को बढ़ावा देने के लिए किया जाता है. जैसा कि हम सभी जानते ही हैं सामाजिक व्यवहार परिवर्तन एक व्यापक और जटिल विषय है. इस पूरी प्रक्रिया में संचार की केन्द्रीय भूमिका है जो कि मात्र सूचनात्मक संचार नहीं बल्कि पारस्परिक संचार पर आधारित होता है जिसके अंतर्गत भाषा और सूचनाओं के साथ मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएं (धारणा, प्रेरणा, अनुभूति आदि) शामिल होती हैं.

समाज के सामान्य व्यवहार मान्यताओं, रीति रिवाजों, दृष्टिकोण और सामाजिक उन्मुखीकरण से निर्मित होते हैं और इन्हें केवल संदेश या अच्छी शिक्षा देकर नहीं बदला जा सकता है।

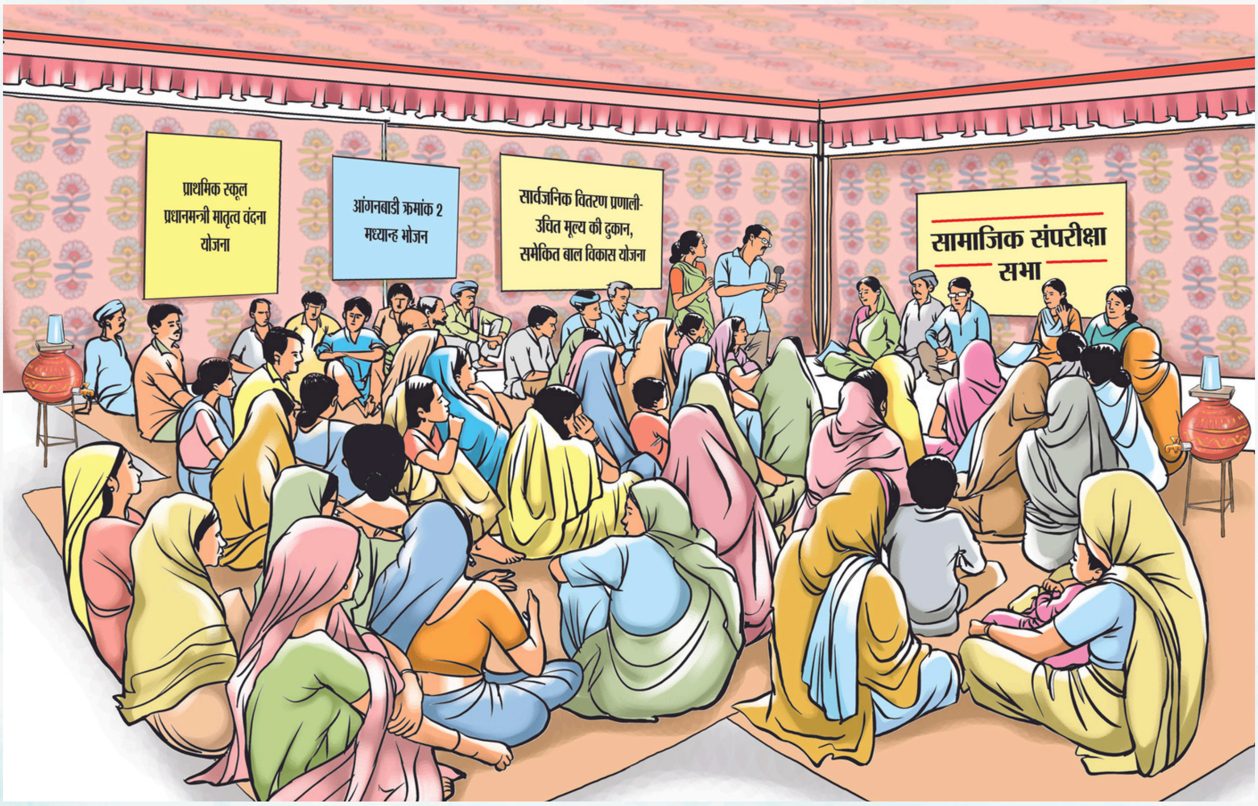

जब हम अपने दायरे से बाहर जाते हैं या जोखिम उठाते हैं, तब शरीर में स्ट्रेस हार्मोन पैदा होता है। दिमाग कहता है कि यह काम मुश्किल है। मत करो। हमें बहुत जोर लगाना पड़ता है, उस काम को करने के लिए। जब वह काम असफल हो जाता है, तब दिमाग हमसे कहता है – देखो, मैंने पहले ही कहा था कि यह काम नहीं होगा और हम अपनी इच्छाशक्ति को और कमजोर कर लेते हैं। पहल के साथ शक्तिशाली हार्मोन की जरूरत होती है ताकि काम करने की इच्छा के साथ उसमें विश्वास भी हो।

संचार
और भाव भंगिमा

- क्या यह स्पष्ट है कि हम कहना क्या चाहते हैं? बताना क्या चाहते हैं? कोई भी उस विषय या कहानी को क्यों जानना चाहेगा?
- संचार को कौन सी बातें प्रभावित करती हैं?
- लक्षित समूह या व्यक्ति कौन हैं?
- विषय कितना संवेदनशील है?
- आपके पास बात कहने के लिए कितना समय है? शारीरिक भाषा बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। अगर आपके पास बात कहने के लिए 30 मिनट हैं, तब आप कैसे बात कहेंगे और जब आपके पास पांच मिनट हैं, तब आप कैसे कहेंगे? अगर एक मिनट है तो कैसे कहेंगे?
- जब विषय की पूरी जानकारी नहीं होती है, तब व्यक्ति कैसे प्रस्तुति देता है?
- जब व्यक्ति के पास शब्द नहीं होते हैं, तब कैसे प्रस्तुति देता है?
- जब व्यक्ति बहुत डरा हुआ/भयभीत होगा, तब प्रस्तुति कैसे देगा?
- जब व्यक्ति को पता हो कि उसकी बात का विरोध किया जाएगा, तब उसकी प्रस्तुति या शारीरिक भाषा कैसी होगी?
- जब व्यक्ति तनाव में होगा, तब उसकी शारीरिक भाषा कैसी होगी?
- जब व्यक्ति डरा हुआ होगा, तब उसकी शारीरिक भाषा कैसी होगी?
- जब व्यक्ति खुद बहुत गहरे तक संवेदना के साथ विषय से जुड़ा होगा, तब वह अपनी बात कैसे कहेगा?
- जब व्यक्ति विषय का जानकार हो, लेकिन संवेदनाओं के स्तर पर विषय से न जुड़ा हो, तब वह कैसे अपनी बात कहेगा?
- जब व्यक्ति संवेदना के साथ विषय से जुड़ा हो, लेकिन उसके पास शब्दकोश न हो, तब उसकी अभिव्यक्ति कैसी होगी?
- कौन सी स्थितियां संचार को प्रभावित करती हैं? भय, असफलता, गलत अर्थ, गलती होना, जानकारी की कमी, घबराहट।
- इनमें से बाहरी तत्व या चुनौतियां कौन सी हैं?
- क्या इन्हें साध पाना असंभव है?

प्रभावी संचार का गहरा संबंध हमारी मनःस्थिति से होता है। संचार की प्रक्रिया में सबसे पहले खुद को तैयार करना होता है। गहरी सांस लेकर अपने शरीर के भीतर ऊर्जा को फैलाना होता है। अपने विषय को स्पष्ट करना होता है। अपने लिए एक नियम बनाना होता है कि अपना शब्द भंडार बढ़ाते रहें। इसके लिए पढ़ते रहना जरूरी होता है।

सुनना और श्रवण करना

जानिये फर्क क्या है?

सामाजिक व्यवहार परिवर्तन एक निरंतर चलने वाली सहभागी प्रक्रिया है। इसकी शुरुआत व्यक्तियों और समुदाय की बात को सुनने और उसे समझने की कोशिश से होती है। कभी भी यह यह प्रयास नहीं होना चाहिए कि किसी भी व्यक्ति, परिवार या समुदाय को उसके विश्वास या व्यवहार के लिए अपराधी ठहराया जाए। उन्हें जानने और समझने का गहरा प्रयास किया जाना चाहिए।

जब किसी बात गंभीरता से सुनी जाती है, तब उसे संवाद में विश्वास होता है और जब विश्वास होता है, तब 'व्यवहार और उसके प्रभावों' पर चर्चा की जा सकती है। जब कोई अपनी बात कह रहा होता है, तब दूसरे व्यक्ति के दिमाग में कोई और विचार नहीं चल रहे होना चाहिए। किसी की बात को केवल इसीलिए नहीं सुना जाना चाहिए कि उन्हें खारिज किया जाना है।

किसी भी **ध्वनि की तरंगों का हमारे कानों में पहुंचना** सुनने की श्रेणी में आता है, लेकिन जब हम किसी बात को **ध्यान लगाकर पूरी एकाग्रता** से सुनते हैं तो वह श्रवण कहलाता है। श्रवण की प्रक्रिया में हमारा मस्तिष्क बात को पूरा सुनता है और सुनने के दौरान कहीं और भटकता नहीं है. और फिर सुनी हुई बात का विश्लेषण करता है।

जब गौर से विश्लेषण करेंगे तब आप खुद यह जान पायेंगे कि आप केवल सुनते हैं या ध्यानपूर्वक सुनते हैं।

जब हम समूह में या दो व्यक्तियों में संचार/संवाद की बात करते हैं, तब केवल सुनना ही महत्वपूर्ण नहीं होता है, पूर्वाग्रह के बिना और ध्यान से सुनना, बात के अर्थ और उसके भावों को समझना भी हमारे सुनने में शामिल होना चाहिये। श्रवण करने में हम कहने वाले व्यक्ति के प्रति अपना सम्पूर्ण आदर भाव रखते हैं.

बिंदु	सुनना	श्रवण करना
अर्थ	सुनना एक व्यक्ति की क्षमता होती है, जिसमें वह अपने कानों से ध्वनि तरंगों को ग्रहण कर सकता है।	श्रवण करने की क्रिया में एकाग्रता और सजगता होती है। इसमें बात/ध्वनि को उसके अर्थों और भावों के साथ सुना जाता है।
यह क्या है?	एक शारीरिक क्षमता है, जो हमें प्राकृतिक रूप से हासिल है।	एक महत्वपूर्ण कौशल है, यह स्वाभाविक रूप से सबको हासिल नहीं होता है। इसे विकसित और अर्जित करना होता है।
प्रकृति	प्राथमिक और सतत	द्वितीयक और निश्चित समय/वक्त पर
गतिविधि	शारीरिक/भौतिक	मनोवैज्ञानिक

बिंदु	सुनना	श्रवण करना
पूर्वाग्रह और धारणाएं	जरूरी नहीं कि व्यक्ति पूर्वाग्रह और धारणाओं से मुक्त हो। पूर्वाग्रह और धारणाएं सन्देश को दूषित करते हैं।	श्रवण करने के लिए पूर्वाग्रहों और धारणों को नियंत्रित करना जरूरी होता है।
शामिल तत्व	कान से ध्वनि/सन्देश को ग्रहण करना	कान से ग्रहण किये गये संदेशों की व्याख्या करना बिना एकाएक टोके, अनुमति लेकर प्रश्न पूछना और कही जा रही बातों की पुष्टि करना
प्रक्रिया	निष्क्रिय शारीरिक प्रक्रिया	सक्रिय मानसिक प्रक्रिया
क्रिया का स्तर	अवचेतन स्तर पर	चेतना के स्तर पर
इन्द्रिय उपयोग	केवल एक	एक से कहीं ज्यादा ज्यादा
कारण	जो भी ध्वनियां हमारे आसपास हैं, हम सबके बारे में जागरूक नहीं हैं, न ही हमारा उन पर कोई नियंत्रण है।	जब हम जिज्ञासु होते हैं और कुछ ज्ञान हासिल करना चाहते हैं, इस मकसद से श्रवण करना। ऐसी क्रिया करने वालों को श्रोता कहा जाता है। संगीत केवल सुनते नहीं हैं, उसे गुनते हैं, उसका अर्थ ग्रहण करते हैं। उससे सुख और दु:ख महसूस करते हैं।
एकाग्रता	जरूरी नहीं, इसलिए यह बहुत आसान क्रिया होती है।	बेहद जरूरी है, इसके लिए अपने आप को तैयार करना होता है।
ध्वनि के स्रोत	केवल सुनने की क्रिया में वक्ता/ध्वनि के स्रोत से कोई सम्बन्ध नहीं बनता	श्रवण करने में ध्वनि के स्रोत/वक्ता से एक किस्म का गहरा जुड़ाव होता है. यह जुड़ाव नेत्र-संपर्क और हाव-भाव से परिलक्षित होता है।
अभ्यास	सुनने के लिए किसी अभ्यास की जरूरत नहीं होती है।	श्रवण की क्रिया में अभ्यास, धीरज और संयम की आवश्यकता होती है।

परिवर्तन
संचार की बुनियादी तैयारी

हम यहां बात कर रहे हैं सामाजिक और व्यवहार परिवर्तन संचार की।
इसको हम कैसे देखते और परिभाषित करते हैं? इसमें क्या है -

समाज (सामाजिक) + व्यवहार + परिवर्तन + संचार

इसमें सामाजिक परिवर्तन के लिए संचार की अपेक्षा है।
समाज के व्यवहार में परिवर्तन की अपेक्षा है।
सामाजिक परिवर्तन के लिए समाज को जानना जरूरी है।
व्यवहार परिवर्तन के लिए समाज के व्यवहार को जानना जरूरी है कि वह है क्या?
समाज के व्यवहार को जानने के लिए उसकी संरचना और उसकी व्यवस्था को जानना जरूरी है?
समाज के व्यवहार, उसकी संरचना और उसकी व्यवस्था को जानने के लिए जरूरी है –

संवाद + अध्ययन + अवलोकन + श्रवण/गहराई से सुनना + महसूस करना + विश्लेषण करना

अगर संवाद, अध्ययन, अवलोकन, श्रवण किए बिना हमने समाज के बारे में और समाज के व्यवहार के बारे में कुछ जाना है तो उसमें ज्यादातर हिस्सा धारणा और पूर्वाग्रह का ही होगा।

महिलाओं और बच्चों के जीवन को बेहतर बनाने के उद्देश्य से सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन के लिए संचार की जरूरत है। इसके लिए यह जानना जरूरी होगा कि

- वर्तमान में सामाजिक व्यवहार क्या हैं?
- सामाजिक व्यवहार सभी सामाजिक-क्षेत्रीय परिस्थितियों में एक सरीखे नहीं होंगे। इसका मतलब है कि हमें स्थानीय संदर्भों में सामाजिक व्यवहार को जानना होगा।
- केवल इससे बात नहीं बनेगी कि सामाजिक व्यवहार को जान लिया जाए और उसे बदलने के लिए संचार करना शुरू कर दिया जाए।
- सामाजिक व्यवहार को जानने के बाद यह समझना होगा कि ऐसा व्यवहार क्यों किया जाता है? इसके कारण क्या हैं? इस व्यवहार के सांस्कृतिक संदर्भ क्या हैं?
- इन सामाजिक व्यवहारों को स्थापित करने में सबसे प्रभावी भूमिका कौन निभाता है?
- संदेश क्या है? उसकी भाषा क्या है? किन तरीकों से ये संदेश दिए जाएंगे?
- अगर इन व्यवहारों में कोई बदलाव लाना है, तो किनके साथ रणनीतिक संचार करने की जरूरत होगी?

यह भी हो सकता है कि मानक व्यवहारों को जानने के बाद, समुदाय यह मान ले कि मानक व्यवहार अपनाए जाने चाहिए, लेकिन व्यावहारिक स्थितियां उन्हें ऐसा करने से रोकती हैं। उदाहरण के लिए पलायन पर जाने की स्थिति में माताएं छह माह से कम उम्र के बच्चे को बार-बार स्तनपान नहीं करवा पाती हैं। अतः हर व्यवहार के साथ जुड़ी स्थितियों को हमेशा जानना-समझना चाहिए।

प्रभावी सामाजिक व्यवहार परिवर्तन संचार का मतलब यह होता है कि समुदाय को उस व्यवहार को अपनी आंखों के सामने देखने, उसे महसूस करने की स्थिति में पहुंचा देना। भले ही उन्होंने अभी इस व्यवहार को अपनाया नहीं हो, लेकिन जरूरी है कि उनकी कल्पना में और उनके मन में उस व्यवहार का चित्र खींच जाए। उसे बदली हुई अवस्था दिखाई देने लगे।

एक अच्छे संचारक का मतलब क्या है -

जो ढेर सारी जानकारी देता है और समुदाय को यह बताता है कि वह स्वयं बहुत जानकारी रखता है।

या

वह जो समुदाय की बात को सुनता है, समझता है, जरूरत पड़ने पर ही बोलता है? निश्चित रूप से समुदाय उसमें विश्वास करता है, जो उसकी बात सुनता है।

सामाजिक व्यवहार परिवर्तन संचार की शुरुआत देखने और सुनने से होती है।

रणनीतिक संचार केंद्र, विकास संवाद का उपक्रम, भोपाल, 07554252789, communication@vssmp.org

सामाजिक और व्यवहार परिवर्तन संचार के नैतिक आयाम

पूर्वाग्रह से मुक्त होना – वस्तुतः समाज और व्यवहार परिवर्तन संचार का मुख्य उद्देश्य व्यक्तियों और समाज के जीवन को बेहतर बनाना होता है, इसलिए सबसे जरूरी होता है कि उनके प्रति कोई पूर्वाग्रह न रखा जाए। पूर्वाग्रह से संचार के प्रभाव में कमी आती है।

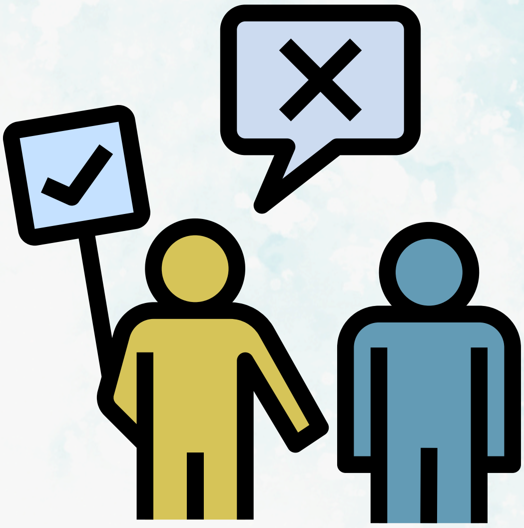

निर्णय व्यक्ति और समुदाय का – समाज और व्यवहार परिवर्तन संचार का प्रभाव बहुत गहरा होता है। इससे कई पीढ़ियों और सदियों से चले आ रहे व्यवहार में बदलाव आता है। इस बदलाव को स्वीकारना और आश्वस्ति के साथ अपना पाना आसान नहीं होता है। अतः व्यक्तियों और समुदाय को ही निर्णय लेने की स्वतंत्रता दी जानी चाहिए।

विविधता का सम्मान - जिस स्थान पर समाज और व्यवहार परिवर्तन संचार की प्रक्रिया संचालित होती है, वहां सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता होती है। विविधता का मतलब है कि कुछ लोगों का व्यवहार एक तरह की मान्यता पर आधारित होगा और कुछ लोगों का व्यवहार दूसरे तरह की मान्यताओं पर आधारित होगा। इन्हें एक दूसरे के विरोध में स्थापित न करें। इनमें तुलना भी नहीं होना चाहिए। विविधता का सम्मान होना जरूरी होता है।

संवाद – समाज और व्यवहार परिवर्तन संचार का मूलभूत तत्व है संवाद। ऐसा कतई नहीं होना चाहिए कि सामाजिक कार्यकर्ता या संचार करने वाले एक तरफ़ा प्रस्तुति करें। यह अपेक्षा न हो कि लोग और समुदाय उनकी बातों या जानकारियों को बिना किसी चर्चा, बहस या परीक्षण के स्वीकार लें और अगर वे ऐसा नहीं करते हैं तो उनके प्रति नकारात्मक नजरिया बनाएं।

निजता का सम्मान – इस प्रक्रिया में व्यक्ति और समुदाय की निजता का पूरा सम्मान किया जाना चाहिए। ऐसा न हो कि उनके व्यवहारों को आरोपों या आक्षेप की तरह प्रस्तुत किया जाए। जब तक व्यक्तियों और समुदाय की सहमति न हो, तब तक उनसे संबंधित कोई भी जानकारी सार्वजनिक नहीं की जानी चाहिए।

अदृश्य/उपेक्षित व्यक्तियों और समुदायों की पहचान
समाज में ऐसे व्यक्ति, परिवार और समुदाय होते हैं, जो संरचनागत कारणों से नीति और विकास की नज़रों से ओझल हो जाते हैं। उनकी तरफ देखना और उनके लिए स्थान बनाना जरूरी होता है।

सहभागिता - समाज और व्यवहार परिवर्तन संचार तभी प्रभावी हो सकता है, जब इसमें समुदाय की सक्रिय सहभागिता हो। सक्रिय सहभागिता का मतलब है विषय या समस्या का विश्लेषण करने में सहभागिता, समस्या को हल करने या विकास की योजना बनाने में सहभागिता और उस योजना को क्रियान्वित करने में नेतृत्वकारी भूमिका लेना। समुदाय केवल संदेश ग्रहण करने वाली निष्क्रिय इकाई नहीं होता है।

जवाबदेही- जब समाज और व्यवहार परिवर्तन संचार का असर पड़ना शुरू होता है, तब सकारात्मक या नकारात्मक प्रतिक्रियाएं हो सकती हैं। हमें सभी हितधारकों और उन सभी के प्रति अपनी जिम्मेदारी का अहसास होना चाहिए, जो बदलाव की प्रक्रिया में शामिल हैं।

स्पष्टता - हमें यह स्पष्ट करना चाहिए कि हम जो भी संदेश दे रहे हैं, अध्ययन कर रहे हैं या बदलाव की प्रक्रिया संचालित कर रहे हैं, उसके उद्देश्य क्या हैं? हम इस प्रक्रिया में सत्यनिष्ठा के साथ शामिल हैं।

सामाजिक और व्यवहार परिवर्तन संचार की दृष्टि

- समाज और व्यवहार परिवर्तन संचार का उद्देश्य व्यक्तियों, समाज और व्यवस्था के व्यवहार में ऐसा परिवर्तन लाना है, जिससे महिलाओं और बच्चों के जीवन में समानता, गरिमा, मूलभूत अधिकारों की रक्षा की जा सके।

- इसका लक्ष्य है कि व्यवस्था और समाज के विभिन्न हिस्सों को ऐसा व्यवहार करने के लिए प्रेरित किया जाए, जिनसे बच्चों और महिलाओं के अधिकारों का स्थाई रूप से संरक्षण हो सके।

- संचार की इस प्रक्रिया में ऐसे संदेश दिए जाते हैं, जिनका वैज्ञानिक आधार होता है, जो प्रमाणित होते हैं और जिनकी पृष्ठभूमि में किसी भी व्यक्ति, पंथ या समुदाय के प्रति कोई पूर्वाग्रह नहीं होता है। इसके साथ ही समाज के ज्ञान को भी समान महत्व प्रदान किया जाता है।

- इस प्रक्रिया में ऐसी नीतियों, कानूनों और व्यवस्था के निर्माण की कोशिश की जाती है, जो वंचित तबकों, उपेक्षित समुदायों और बहिष्कार से प्रभावित लोगों की पहचान करके उन्हें समानता के स्तर पर ला सकें।

- यह सुनिश्चित करना भी अनिवार्य है कि व्यक्तियों, परिवार या समुदाय के प्रति कोई रूढ़िबद्ध धारणा या संकुचित नजरिया न बने। इसके दूसरी तरफ संचार के माध्यम से पूर्व में बनी रूढ़िवादी मान्यताओं और व्यवहार को निष्प्रभावी करने का लक्ष्य होता है।

- मूलभूत मूल्यों का सम्मान एक महत्त्वपूर्ण तत्व है। जो भी संदेश दिए जाएं, उनमें व्यक्ति की गरिमा, परस्पर सौहार्द, निर्णय लेने की स्वतंत्रता, सामाजिक - सांस्कृतिक विविधता और न्याय के मूल्य अवश्य शामिल होने चाहिए। इसका दूसरा अर्थ यह भी है कि इन सामाजिक - संवैधानिक मूल्यों को कमज़ोर नहीं किया जाना चाहिए।

बदलाव के लिए सामाजिक व्यवहार का अध्ययन

सामाजिक व्यवहार परिवर्तन संचार की योजना बनाने और उसे सार्थक रूप से क्रियान्वित करने के लिए सामाजिक कार्यकर्ता और सामाजिक नागरिक संस्था के रूप अपनी समझ को हमेशा बेहतर बनाने की जरूरत होती है और इस जरूरत को पूरा करने के लिए जरूरी होता है, समाज को जानने की जिज्ञासा का होना।

सामाजिक व्यवहार के पीछे सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक कारण होते हैं. अतः इनके बारे में संवाद करना जरूरी होता है।

इसे एक गतिविधि के माध्यम से बेहतर समझ सकते है -
यहाँ हम पोषण, शिशु स्वास्थ्य और लैंगिक समानता के नज़रिए से एक विषय का सन्दर्भ ले रहे हैं। इसी तरह अन्य सामाजिक-आर्थिक विषयों के अध्ययन की रूपरेखा भी बनाई जा सकती है। जैसे -बच्चों के स्वास्थ्य, पोषण और देखरेख से सम्बंधित पहलुओं से सम्बंधित सामाजिक व्यवहार का अध्ययन भी किया जा सकता है।

इसका मुख्य उद्देश्य यह जानना है कि बच्चों और महिलाओं से सम्बंधित सामाजिक व्यवहार के पीछे की सामाजिक और सांस्कृतिक मान्यताएं क्या हैं?

यह जानने के लिए कुछ विषय चुने गए है जिन पर प्रश्नों के आधार पर चर्चा करते हुए जानकारी जुटाना है।
ध्यान रहे कि चर्चा बहुत ही विस्तार से होगी और उससे निकले बिन्दुओं को हम ध्यान से दर्ज करेंगें -

- अगर कोई कहानी है, तो उसे भी दर्ज करें।
- अगरे कोई रीति-रिवाज है तो उसे भी स्पष्ट रूप से दर्ज करें।
- हर एक प्रश्न पर अधिकतम 400-400 शब्दों में जानकारी हो सकती है।
- हमें वही जानकारी दर्ज करना है, जो समुदाय के सदस्य बताएँगे। प्रयास यह करना है कि उनके साथ गंभीर रूप से और गहराई से चर्चा की जा सके।
- इस प्रारूप में केवल वही जानकारी/बात दर्ज करें, जो बिलकुल स्पष्ट और तथ्यपरक हो। कोई भी सामान्य वाक्य दर्ज न किया जाए।

संबंधित महत्वपूर्ण प्रश्न

1. क्या शिंशु को जन्म के एक घंटे के भीतर स्तनपान करवाया जाता है? अगर नहीं, तो बच्चे के जन्म के एक घंटे के भीतर स्तनपान क्यों नहीं करवाया जाता है? इसके पीछे की मान्यताएं, विश्वास और सोच क्या है?

2. जन्म के कितने दिनों/महीनों बाद बच्चे को ऊपरी आहार देना शुरू किया जाता है? सबसे पहले क्या दिया जाता है? इसके पीछे की मान्यताएं, विश्वास और सोच क्या है?

3. क्या लड़कियों का विवाह अठारह वर्ष की उम्र से पहले करवाया जाता है? लड़की का विवाह कम उम्र में या 18 वर्ष की उम्र से पहले क्यों करवाया जाता है? इसके पीछे की मान्यताएं, विश्वास और सोच क्या है?

4. लड़के का विवाह कम उम्र में या 21 वर्ष की उम्र से पहले क्यों करवाया जाता है? इसके पीछे की मान्यताएं, विश्वास और सोच क्या है?

5. जब महिला गर्भवती होती है, तो इसके सूचना जल्दी क्यों नहीं दी जाती है? खासकर आंगनवाड़ी केंद्र और स्वास्थ्य कार्यकर्ता को? इसके पीछे की मान्यताएं, विश्वास और सोच क्या है?

6. गर्भवती महिला को दिन में बार-बार खाना खाना चाहिए. क्या गर्भवती महिलायें 4-5 बार खाना खाती हैं या नहीं? अगर नहीं तो क्यों? इसके पीछे की मान्यताएं, विश्वास और सोच क्या है?

7. परिवार में कितने बच्चे होने चाहिए? इसका निर्धारण कैसे होता है? और क्या सोच कर होता है? निर्णय लेने में मुख्य भूमिका किसकी होती है?

8. बच्चे कुपोषित क्यों होते हैं? समुदाय की इसके बारे में क्या सोच है? क्या समुदाय के अपने कोई तरीके हैं कुपोषण से उबरने के? इसके पीछे की मान्यताएं, विश्वास और सोच क्या है?

9. क्या समुदाय में पानी को इस्तेमाल से पहले साफ़ किया जाता है? कैसे साफ़ किया जाता है?

10. यदि बच्चा बीमार होता है, तब सबसे पहले दिन क्या कदम उठाये जाते हैं? बच्चों की बीमारी से जुड़े व्यवहार के पीछे की मान्यताएं, विश्वास और सोच क्या है?

11. क्या शौच के बाद साबुन से हाथ धोने की आदत है? इसके पीछे की मान्यताएं, विश्वास और सोच क्या है?

12. जब बच्चे को ऊपरी आहार दिया जाता है, तब उसे क्या खिलाया जाता है? कब खिलाया जाता है? इसके पीछे की मान्यताएं, विश्वास और सोच क्या है?

13. आयरन फोलिक एसिड की गोलियां कितनी खाई जाती हैं? अगर नहीं खाई जाती हैं तो क्यों? इसके पीछे की मान्यताएं, विश्वास और सोच क्या है?

14. लड़के और लड़कियों में अंतर होता है. क्या अंतर होता है? अंतर क्यों होता है? इसके पीछे की मान्यताएं, विश्वास और सोच क्या है?

15. क्या यह माना जाता है कि महिलायें ज्यादा बीमार पड़ती हैं? उन्हें ज्यादा थकान होती है? पुरुष क्या सोचते हैं और महिलायें क्या सोचती हैं? इसके पीछे की मान्यताएं, विश्वास और सोच क्या है?

16. दो-तीन साल की उम्र के बच्चे खुद अपने हाथ से अलग बर्तनों में खाना खाते हैं या नहीं? इसके पीछे की मान्यताएं, विश्वास और सोच क्या है?

17. क्या परिवार/परिजनों को यह पता होता है कि बच्चे का वजन कम है और इससे बच्चे का विकास नहीं हो पायेगा? इससे सम्बंधित मान्यताएं, विश्वास और सोच क्या है?

18. अगर कोई बच्चा अति गंभीर तीव्र कुपोषित होता है, तब उसे पोषण पुनर्वास केंद्र ले जाते हैं? इससे सम्बंधित मान्यताएं, विश्वास और सोच क्या है?

19. गर्भावस्था के दौरान महिलाओं को किस तरह के तनाव या दबाव होते हैं? क्या वे अपने नियमित काम से मुक्त हो पाती हैं? क्या उनके साथ हमेशा सम्मानजनक व्यवहार होता है? इससे सम्बंधित मान्यताएं, विश्वास और सोच क्या है?

20. माहवारी के समय किशोरियों के साथ किस तरह का व्यवहार होता है? क्या वह व्यवहार नियमित रूप से किये जाने व्यवहार से अलग होता है? इससे सम्बंधित मान्यताएं, विश्वास और सोच क्या है?

इन जानकारियों के आधार पर पर ही यह स्पष्ट होगा कि सामाजिक व्यवहारों के कारण और उसकी पृष्ठभूमि क्या है ? जब कारण और पृष्ठभूमि स्पष्ट होगी, तभी सामाजिक व्यवहारों में बदलाव, प्रोत्साहन या संशोधन की बात स्पष्ट हो सकेगी।